६३५ ववाणिया, भादों सुदी ७, मंगल, १९५१

संवत्सरी तक तथा आज दिन तक आपके प्रति मन, वचन और कायाके योगसे जो कुछ जाने अनजाने अपराध हुआ हो उसके लिये सर्व भावसे क्षमा माँगता हूँ। तथा आपके सत्समागमवासी सब भाइयों तथा बहनोंसे क्षमा माँगता हूँ।

यहाँसे प्रायः रविवारको जाना होगा ऐसा लगता है। मोरबीमें सुदी १५ तक स्थिति होना संभव है। उसके बाद किसी निवृत्तिक्षेत्रमें लगभग पंद्रह दिनकी स्थिति हो तो करनेके लिये चित्तकी सहजवृत्ति रहती है।

कोई निवृत्तिक्षेत्र ध्यानमें हो तो लिखियेगा।

आ० सहजात्मस्वरूप।

६४३ बंबई, आसोज सुदी १३, १९५१

श्री स्तंभतीर्थवासी तथा निंबपुरीवासी मुमुक्षुजनके प्रति, श्री स्तंभतीर्थ।

कुछ पूछने योग्य लगता हो तो पूछियेगा।

जो कुछ करने योग्य कहा हो, वह विस्मरण योग्य न हो इतना उपयोग करके क्रमसे भी उसमें अवश्य परिणति करना योग्य है। त्याग, वैराग्य, उपशम और भक्तिको सहज स्वभावरूप कर डाले बिना मुमुक्षुजीवको आत्मदशा कैसे आये ? परंतु शिथिलतासे, प्रमादसे यह बात विस्मृत हो जाती है।

---

६४४ बंबई, आसोज वदी ३, रवि, १९५१

पत्र मिला है।

अनादिसे विपरीत अभ्यास है, इससे वैराग्य, उपशमादि भावोंकी परिणति एकदम नहीं हो सकती, किंवा होनी कठिन पड़ती है, तथापि निरंतर उन भावोंके प्रति ध्यान रखनेसे अवश्य सिद्धि होती है। सत्समागमका योग न हो तब वे भाव जिस प्रकारसे वर्धमान हों उस प्रकारके द्रव्यक्षेत्रादिकी उपासना करना, सत्शास्त्रका परिचय करना योग्य है। सब कार्यकी प्रथम भूमिका विकट होती है, तो अनंतकालसे अनभ्यस्त ऐसी मुमुक्षुताके लिये वैसा हो इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है।

सहजात्मस्वरूपसे प्रणाम।

---